National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.newresearchjournal.com
ISSN: 2455-9040
Received: 20-10-2025, Accepted: 19-11-2025, Published: 04-12-2025
Volume 10, Issue 4, 2025, Page No. 74-76

शिक्षा और वैश्वीकरण: समस्याएं और समाधान

डॉ. भरत उपाध्याय
शिक्षा विभाग, मंदसौर विश्वविद्यालय, मंदसौर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
वैश्वीकरण एक विश्वव्यापी प्रक्रिया है। वैश्वीकरण ने समकालीन युग में सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया है। शिक्षा भी वैश्वीकरण से प्रभावित होने वाला एक आवश्यक तत्व है या यू कहे कि वैश्वीकरण का शिक्षा के साथ गहरा संबंध है तथा यह समाज को आकार देने का महत्वपूर्ण कार्य करती है साथ ही साथ यह किसी भी अर्थव्यवस्था की रीढ की हड्डी है। इसलिए इसे वैश्वीकरण के साथ जोडा जाना चाहिए। वैश्वीकरण का दुनियाभर में शिक्षा प्रणालियों पर गहरा प्रभाव पडा है। विशेष रूप से विकासशील दुनिया जो युवाओं की शिक्षा को मार्ग के रूप में देखती है। वैश्वीकरण का शिक्षा पर प्रभाव के संदर्भ में विद्वानों के अलग–अलग मत है। कुछ लोग मानते है कि वैश्वीकरण के शिक्षा पर कई नकारात्मक प्रभाव पडते है तथा इस शब्द को अभाव, आपदा के साथ जोडते है वही दूसरी ओर कई लोग इसे फलदायी घटना मानते है। दोनो विचारों का वर्णन करने में कई लोगों ने वैश्वीकरण को प्रगति, समृद्धि और शांति के साथ वैश्वीकरण को जोडा है प्रस्तुत लेख में शिक्षा पर वैश्वीकरण का समस्याएं और समाधान देखने का प्रयास किया गया है।

मूल शब्दः शिक्षा, वैश्वीकरण

प्रस्तावना
वैश्वीकरण का अर्थ है –सम्पूर्ण विश्व का एकजुट हो जाना। 21 वीं सदी की मूलभूत वास्तविकता वैश्वीकरण है। जिसने शिक्षा को बहुत प्रभावित किया है। हम वैश्वीकरण को एक ऐसी वास्तविकता यथार्थ के रूप में परिभाशित करते है। जो बढती हुई समेकित अर्थव्यवस्था, नई सूचना और सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी अन्तर्राष्ट्रीय ज्ञान के एक नैटवर्क का उदय अंग्रेजी भाषा की भूमिका और शैक्षिक संस्थानों के नियंत्रण से बाहर के अन्य बलों से निर्धारित होता है। महात्मा गांधी ने वैश्वीकरण का समर्थन करते हुए कहा है कि ''मै यह नही चाहता कि मेरे घर को ऊंची चारदीवारी से घेर दिया जाए और खिडकियों को मजबूती से बंद कर दिया जाए मैं चाहता हूं कि सभी संस्कृतियों का प्रवाह मुक्त रूप से मेंरे घर मे हों परंतु मैं उस प्रवाह में उखडने से इंकार करता हूं''। अतः गांधी जी वैश्वीकरण के नफे–नुकसान से भली– भांति परिचित थे।
वैश्वीकरण के दौर में हम देखते है कि जहां यातायात व्यवस्था क्रान्तिकारी सूचना प्रौद्योगिकी व्यापार उत्पादन उच्च गुणवत्ता रोजगार मे वृद्वि आदि देखने को मिलती है इससे न केवल व्यवसायीकरण को बढावा मिला बल्कि विभिन्न संस्कृतियां समीप आई और सम्पूर्ण विश्व एक परिवार बन गया।
वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने जीवन के तमाम क्षेत्रो में क्रान्तिकारी परिवर्तन किए है इसमें सबसे प्रमुख शिक्षा है वैश्वीकरण का महत्वपूर्ण प्रभाव शिक्षा के क्षेत्र में परिलक्षित होता है। विशेषकर तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में किंतु यह प्रभाव शहरी क्षेत्रो में अधिक व ग्रामीण क्षेत्रों में कम देखने को मिलता है।

अतः वैश्वीकरण का यदि समस्याएं है तो समाधान भी है।
वैश्वीकरण वर्तमान समय के व्यापारिक माहौल की ऐसी अवधारणा है जो पूरे विश्व को एक मंडल अथवा केन्द्र बनाने की ओर अग्रसर है। वैश्विक ग्राम की संकल्पना को साकार करने का लक्ष्य लेकर बढती वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने समाज के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है। शिक्षा इसमें मुख्य रूप से प्रभावित होती है इसे निम्न बिंदुओं से समझा जा सकता है –

- वैश्वीकरण के कारण शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्ति है जिससे शिक्षा के क्षेत्र में नई–नई तकनीकियों का समावेश किया जा रहा है। जहां पहले शिक्षा केवल व्याख्यान विधि द्वारा पाठ्यक्रम के आधार पर दी जाती थी वहॉ आज प्रोजेक्टर विडियों क्रान्फ्रेन्सिंग के आधार पर प्रश्नोत्तरी विधि, प्रदर्शन विधि आदि के माध्यम से दी जाने लगी है। जिससे आज शिक्षा के क्षेत्र में निर्मितवाद अभिसंज्ञानवाद आदि नए सम्प्रत्यय उभर रहे है।
- वैश्वीकरण शिक्षा अन्तर्राष्ट्रीय विकास को प्रोत्साहित करने के साथ–साथ वैष्विक उद्योगों को मजबूत करने में योगदान देने के लिए दुनियाभर की प्रणालियों से शिक्षण के तरीको को आपस में जोडती है। ये शैक्षिक पहल प्राथमिक से विश्वविद्यालय स्तर तक स्कूल में वैश्विक पहुँच को प्रथमिकता देती है तथा सीखने के अनुभवों को प्राथमिकता देती है तथा सीखने के अनुभवों को प्रेरित करती है जो छात्रों को बहुराष्ट्रीय नेतृत्व की भूमिका के लिए तैयार करती है।
- ''सैटेलाइट और ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम'' दुनिया को ऑडियो और विडियों के जरिए एक तार में पिरो दिया है ग्लोबल इन्फोरमेशन सुपर हाइवे बनाए गए है जिसमें सोषल वेबसाइट भी शामिल है इसके कारण सूचना का प्रसार और ज्ञान तेजी से फैल रहा है।
- वर्तमान मे प्रत्येक राष्ट्र यह चाहता है कि उसके बच्चे शिक्षित होकर अच्छा नागरिक समझदार व जागरूक बने कहने का तात्पर्य है बच्चों को शिक्षा के लिए सभी सुविधाएं एवं विकास के अवसर प्रदान हो जिससे वह स्वस्थ व आन्नदमय जीवन यापन कर सके। यह सभी वैश्वीकरण के कारण संभव हो सका है।
- वैश्वीकरण के कारण ''सर्वजन हिताय'' ''सर्वजन सुखाय'' की विचारधारा का जन्म हुआ जिससे सभी देशो को एक दूसरे के लिए शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक सहयोग की भावना विकसित हुई अर्थात अन्तर्राष्ट्रीय भावना का विकास हुआ।
- वैश्वीकरण अन्तर्राष्ट्रीय ढ़ांचे पर भारतीय शिक्षा के गठजोड समन्वय का नाम है इस दोहरी शिक्षा ने बहुआयामी बनने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा स्तर के अतिरिक्त अनेक सीमाओं को पार कर लिया है। वैश्विक रूप से व्यवस्थित होने के लिए शिक्षा का संचार सिमटता जा रहा है और इस क्षेत्र में वैश्वीकरण की अवधारणा परम्परा और आधुनिकता के बीच सेतु का काम करती दिखाई देती है ।

- शिक्षा के माध्यम से सम्पूर्ण जीवन की गतिविधियों से अवगत होना वैश्वीकरण के कारण संभव हो पाया है। अतः वैश्वीकरण ने ज्ञान की सीमाओं का विस्तार किया है।
- वैश्वीकरण के दौर में विकसित देश उन्नत शिक्षा के क्षेत्र में अध्ययन और शोध के अवसर प्रदान करते है। इस हेतु राष्ट्रीय शिक्षा समिति शिक्षकों एवं शिक्षाधिकारियों द्वारा निर्मित समिति का निर्माण किया गया है। इस समिति ने अर्न्तराष्ट्रीय सम्पर्क स्थापित करने के निमित्त 1920 में अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्क समिति की स्थापना की 1945 में इस समिति के नियंत्रण हेतु यूनेस्को के शिक्षा कार्यक्रम को दुनिया भर के देशों में 53 क्षेत्रीय कार्यालयों और कई विशिष्ट संस्थानों व केंद्रों के वैश्विक नेटवर्क द्वारा समर्थित किया जाता है। ये कार्यालय 194 सदस्य देशों में शिक्षा संबंधी गतिविधियों को क्रियान्वित करने के लिए कार्यरत हैं। शिक्षा के अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित करने के प्रयास में अमेंरिका, कनाडा, फ्रांस, चीन तथा भारत के लगभग 1.8 मिलियन से अधिक छात्र विदेशों मे शिक्षा पा रहे है। वर्तमान में इसकी से और बढ गई है ।

वैश्वीकरण की विभिन्न उपलब्धियों के उपरान्त वैश्वीकरण भारत में पाई जाने वाली सभी समस्याओं के समाधान के लिए संजीवनी बूटी सिद्व नही हुई है। अतः इसकी कई समस्याएं भी है इसे निम्न बिंदुओं से समझा जा सकता है–

- आज शिक्षा के क्षेत्र में कोई भी धनी व्यक्ति शिक्षा संस्थान की स्थापना करके अपने मनमाने ढग से छात्रों से शुल्क वसूल करता है और छात्र उपाधि को प्राप्त करने हेतु धन देने को तैयार हो जाते है जिससे शिक्षा की गुणात्मक वृद्वि न होकर संख्यात्मक वृद्वि हो गई है अब उच्च शिक्षा प्राप्त करना गरीबों की सीमा से परे है इसलिए विश्व की बहुसंख्या के लिए वैश्वीकरण ने अच्छे और लाभकारी परिणाम नही दिए है बल्कि देशों के बीच में आमदनी की असमानताएं पैदा कर दी है ।
- आज भारत में लगभग 19.1% वयस्क निरक्षर हैं, और 2024–25 तक लगभग 1.17 मिलियन बच्चे स्कूल से बाहर थे। वयस्क निरक्षरता दर दर्शाती है कि लगभग पाँच में से एक भारतीय वयस्क पढ़ या लिख नहीं सकता। स्कूल न जाने वाले बच्चों की संख्या उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में सबसे ज़्यादा है।। शिक्षा के मौलिक अधिकार के अनुसार ''शिक्षा पर सब का समान अधिकार है'' किंतु यह केवल धनी वर्ग तक सिमट कर रह गया है।
- वैश्वीकरण के कारण शिक्षा को आर्थिक दृष्टि से देखने की प्रवृति बढी है शिक्षा एक बाजार की वस्तु बनकर रह गई है जिसे उत्पादकता के साथ जोडकर देखा जाने लगा है। देश के भावी विद्यार्थियों को संसाधन व उत्पाद के रूप में प्रस्तुत किया जाने लगा है। शिक्षा एक आध्यात्मिक व नैतिक प्रक्रिया के स्थान पर व्यवसायिक प्रक्रिया बन गई है। शिक्षा के उद्देष्यों में भौतिक समृद्वि को सर्वोपरि रखा गया है तथा युवकों का लक्ष्य येन केन प्रकारेन डिग्री प्राप्त करना रह गया है। पाठ्यक्रम में विज्ञान व तकनीकी का समावेश है तथा आध्यात्म, धर्म व नैतिकता का स्थान नाममात्र भी नही है। शिक्षक शिक्षार्थी संबंधों में औपचारिकता का समावेश हो गया है। सेवा के रूप में व धर्म का कार्य माना जाने वाला शिक्षण कार्य एक व्यवसाय व जीविकोपार्जन का साधन बनकर रह गया है।
- शिक्षा आम व्यक्ति व निम्न वर्ग की पहुंच से दूर व सामाजिक तथा क्षेत्रीय क्षमता को बढावा देने वाली सिद्व हो रही है तथा विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता व असंतोष को बढा रही है शिक्षा में भावात्मक पक्ष व सौन्दर्य बोध के स्थान पर केवल ज्ञानात्मक पक्ष को विकसित करने पर बल है।
- उच्च शिक्षा के वैश्वीकरण के मौजूदा दौर में अन्तर्राष्ट्रीय विद्यार्थी गतिशीलता का एक प्रमुख मुद्दा है मई 2025 में विदेश मंत्रालय ने बताया कि वर्तमान में 1.8 मिलियन से अधिक भारतीय छात्र विदेश में अध्ययन कर रहे हैं, जो कि दो वर्ष पहले के 1.3 मिलियन से काफी अधिक है।।
- आज शिक्षा में सबसे बडा संकट मूल्यों का है। पिछले 5–6 दषकों में प्रौद्योगिकी संचार और तकनीकी प्रगति के साथ ही वैश्वीकरण का युग प्रारंभ हुआ जिसके कारण विश्व में एक नया वर्ग तथा उसकी नई सोच और जीवन शैली विकसित हुई है। यह जीवन शैली इस वर्ग को अपने देश की सभ्यता, संस्कृति, भाषा इतिहास से काट रही है यह भी डर है कि कही आगे चलकर यह वर्ग अपनी पहचान न खो दे। ऑलिवन टॉफलर ने अपनी पुस्तक ''फ्यूचर शॉक'' में इस संभावना की चर्चा विस्तार से की है ।
- इस प्रकार थियोडोर रोजेक ने अपनी पुस्तक ''द मेकिग ऑफ ए काउन्टर कल्चर'' में कहा है कि ''वेबसाइट जेट और अश्लील फिल्मों के व्यापक प्रसार ने मानव समाज की चुले हिला दी है। तंत्रशाही ने एक ऐसी संस्कृति को जन्म दे डाला है जिसका संबंध मात्र दैहिक समागम हो गया है''।
- वर्तमान समय में शिक्षा संस्थओं में जो परिवेष विकसित हो रहा है उसमें नैतिक वर्जनाएं और व्यवहार ध्वस्त हो रहे है जो सर्वेक्षण किए जा रहे है तथा जो उनके परिणाम आ रहे है वे भारतीय संदर्भ में ही नही बल्कि वैष्विक संदर्भ में भी भयावह है वह हिंसक, आक्रामक और अनैतिक वातावरण को विकसित कर रहे है।
- वैश्वीकरण के कारण वर्तमान शिक्षा व्यक्तिगत होती जा रही है। शिक्षा अच्छे करियर के लिए छात्र को योग्य बना रही है, प्रतियोगी भावना विकसित कर रही है पर छात्र मे सामाजिक दृष्टि, सामाजिक सोच और समाज के प्रति कर्तव्यों को विकसित नही कर पा रही है।
- वैश्वीकरण से शिक्षा के क्षेत्र में समानता होने के बजाय असमानता बढ रही है आज महंगी शिक्षा पद्वति के कारण एक तरफ धनी तो दूसरी तरफ निर्धन लोगों का देश बनकर रह गया है अब शिक्षा प्राप्त करना गरीब के बस की बात नही है। विश्वविद्यालय में सरकार सब्सिडी में कटौती कर रही है जिससे विद्यालयों महाविद्यालयों की फीस में कई गुना वृद्वि हो रही है इसलिए विश्व की बहुसंख्या के लिए वैश्वीकरण ने अच्छे और लाभकारी परिणाम नही दिए है बल्कि देशों के अंदर तथा देशों के बीच में आमदनी और असमानताएं पैदा कर दी है ।
- वैश्वीकरण के कारण अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर परिवर्तन बडी तेजी से हो रहा है जल्दी–जल्दी नए संचार माध्यम एवं नई तकनीक सामने आ रही है जिनके चलते उत्पाद तकनीक, पद्वतियां एवं अन्य तौर तरीके तेजी से पुराने पडते जा रहे है।
- एक तरफ जहॉ देश की सरकार के पास शैक्षिक गतिविधियों की देखरेख करने हेतु भारी भरकम मंत्रालय है लेकिन दूसरी तरफ वह शैक्षिक सुधारों पर नीति रिपोर्ट तैयार करने के लिए निजी क्षेत्र के उद्यमियों और ऐजेन्सियों का सहारा ले रही है तो क्या ये समझ लेना चाहिए कि अब सरकार से शैक्षणिक कार्य नही हो पा रहा है और इसलिए ये अपने संस्थानों को निजी क्षेत्र के नियंत्रण में करती जा रही है। ऑकडों के अनुसार 838 संस्थानों में से सिर्फ 230 संस्थान ही सरकार के अधीन है बाकि सब निजी क्षेत्र के अधीन है। कैसे भरोसा किया जा सकता है कि निजी क्षेत्र के नियंत्रण के संस्थान भी भविष्य में अच्छी शिक्षा प्रदान करें।

निष्कर्ष

इस प्रकार समग्र रूप से विष्लेषण करने पर निष्कर्षतः यह बात कही जा सकती है कि ''यत्र विश्व भवत्येक नीड'' अथर्ववेद की यह भावना सम्पूर्ण विश्व को एक घौंसले के रूप में देखती है लेकिन वैश्वीकरण के मूल में ''वसुधैव कुटुम्बकम'' जैसी भावना कम प्रतीत होती है डॉ सच्चिदानन्द इसे स्पष्ट करते हुए कहते है कि ''इसमें बचपन में वर्जना और प्रताडना है, जवानी में स्पर्धा और असुरक्षा का तनाव है और बुढापे में अर्थहीनता का अवसाद''। इस तरह वैश्वीकरण आज हमें आधुनिक सभ्यता हासिल करने का अभियान देकर ऐसे मौकाम पर ला दिया है जहॉ हम विश्व को जीतकर जीवन को हार रहे है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि जब किसी सिद्वात का प्रादुर्भाव होता है तो उसके कुछ फायदे भी होते है और कुछ नुकसान भी। अतः वैश्वीकरण की तीव्र प्रक्रिया तेजी से परिवर्तनो के साथ सकारात्मक तथा नकारात्मक की मिली जुली तस्वीर प्रस्तुत कर रही है।

संदर्भ सूची

1. यादव मुकेश – वैश्वीकरण की अवधारणा एवं उसके प्रभाव का मूल्यांकन– National journal of multidisciplinary research and development.3(1) jan 2018 pg 589–590
2. अल्टबाख फिलिप जी – विश्व में शैक्षणिक क्रान्तिरू भारत के लिए निहितार्थ – परिपेक्ष्य 19(1) अप्रेल 2012 पेज 1–18.
3. पंडित मनीषा –पूरी दुनिया में प्रासंगिक है महात्मा गांधी के विचार –आवरण कथा–अक्टूबर 2016, पेज 33–36.
4. सिंह नरेन्द्र, शर्मा दीपा – वैश्वीकरण के दौर में भारत, कुरू क्षेत्र जनवरी 2005, 51(3) पेज12–13 .
5. भोक्ता नरेश प्रसाद और चौधरी रूक्मिणी– भूमंडलीकरण के दौर में परम्परागत भारतीय शिक्षा की प्रासंगिकता, परिपेक्ष्य 19(3), दिसंबर 2012
6. पुस्तक – भारतीय अर्थव्यवस्था और शिक्षा – ईकाई–2 (2.2. 8–2.2.8

Websites

1. https://www.indiatoday.in/diu/story/indian-students-still-like-foreign-education-but-us-is-slowly-losing-preference-2793412-2025-09-25
2. https://www.oecd.org/en/publications/international-migration-outlook-2025_ae26c893-en.html#:~:text=Following%20three%20years%20of%20sharp,resettled%20refugees%20(+19%25).
3. https://unessafoundation.org/lack-of-education-in-india-statistics/#:~:text=Deep%20Dive:%2015%20Startling%20Statistics,rates%20due%20to%20infrastructure%20issues.
4. https://www.unesco.org/en/education/action#:~:text=Childhood%20Development%20(IECD)-,Networks,Training%20Network%20(UNESCO%2DUNEVOC)
5. https://timesofindia.indiatimes.com/education/study-abroad/1-8-million-and-rising-here-is-why-indian-students-prefer-studying-at-international-destinations/articleshow/121489474.cms